SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बस्तर पंडुमः संस्कृति, शिक्षा और युवा चेतना का अंतर्संबंध

कीर्ति साहू,
स्कूल शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़, भारत
अर्चना वर्मा, पीएच–डी, स्कूल शिक्षा विभाग
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् शंकर नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
कीर्ति साहू
अर्चना वर्मा, पीएच–डी
E-mail : kirtisahu30@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/02/2026
Revised on : 16/04/2026
Accepted on : 25/04/2026
Overall Similarity : 00% on 17/04/2026

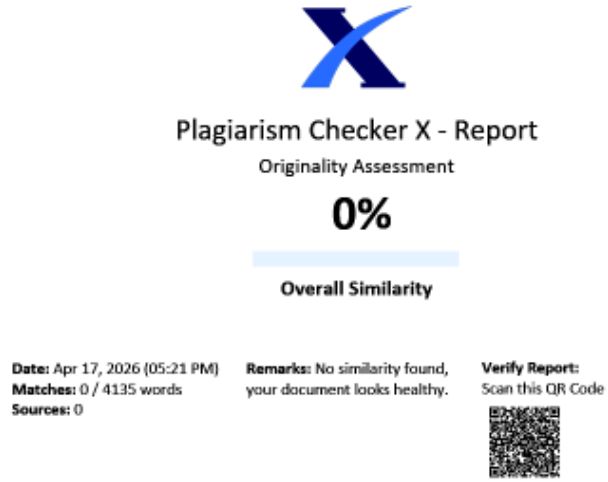

शोध सार

जहाँ एक ओर भारत की सांस्कृतिक विविधता विश्व में अद्वितीय मानी जाती हैं, वहीं दूसरी ओर मध्यभारत में स्थित छत्तीसगढ़ राज्य का बस्तर अंचल भी अपनी विशिष्ट आदिवासी जीवन शैली, अत्यंत समृद्ध लोकपरंपराओं, एवं जनजातीय शिल्प कलाओं के लिए विश्व–विख्यात है। इस संदर्भ में बस्तर की जीवन–पद्धति एवं लोक विरासत को अभिव्यक्त करने वाला बस्तर पंडुम एक महत्वपूर्ण जनजातीय उत्सव के रूप में उभरकर सामने आया है जो, इस क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। यह उत्सव न केवल इस अंचल के लोकनृत्य, लोकगीत और पारंपरिक अभिव्यक्तयों को उद्घाटित करता है, बल्कि शिक्षा और युवा चेतना के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्द्धन में भी अहम भूमिका निभाता है। इस उत्सव का मूलमंत्र है "संस्कृति से स्वाभिमान, और शिक्षा से उत्थान"। प्रस्तुत शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य बस्तर पंडुम के संदर्भ में संस्कृति, शिक्षा और युवा चेतना के मध्य विद्यमान अंतर्संबंध का विश्लेषण करना है। क्षेत्रीय अवलोकन पर आधारित उक्त अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि, पारंपरिक उत्सव किस प्रकार सामाजिक एकता, सांस्कृतिक निरंतरता, क्षेत्रीय समरसता के साथ–साथ युवा पीढ़ी के बौद्धिक एवं समग्र विकास को प्रभावित करते हैं। साथ ही यह इस ओर भी इंगित करता है कि जिस क्षेत्र की युवा शक्ति अपनी मूल पहचान पर गर्वित होकर शिक्षा का सानिध्य लेती हैं, वह अपने समाज का उत्थान निश्चित रूप से कर सकती है।

मुख्य शब्द

बस्तर पंडुम, संस्कृति, सांस्कृतिक विरासत, जनजातीय परंपरा, युवा चेतना और शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा.

परिचय

'बस्तर' यह नाम सुनते ही मन और मस्तिष्क में अनेक छवियाँ एक साथ उभरने लगती हैं। घने वनों से आच्छादित

पर्वत, कलकल करते झरने, भव्य जलप्रपात और प्रकृति की अनुपम सुंदरता इस क्षेत्र की विशिष्ट पहचान निर्मित करती हैं। विभिन्न साहित्यों के अध्ययन से पता चलता है कि जिस प्रकार इसकी पहचान अनोखी है, उसी तरह इसके अभिधान के पीछे का इतिहास भी काफी रोचक है। बस्तर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि इसे दंडकारण्य, चक्रकूट (चक्रकोट), दक्षिण कोसल, महाकांतारण्य और भ्रमरकूट जैसे कई नामों से अभिहित करती है।

यदि भारत को एक जीवंत शरीर माना जाए तो छत्तीसगढ़ उसका हृदय प्रतीत होता है और उस हृदय की स्पंदित धड़कन के रूप में बस्तर अपनी अप्रतिम छवि के साथ प्रकृति, जनजातीय संस्कृति और परंपराओं की जीवंतता को संजोए हुए है। यहाँ की जनजातीय परंपराएँ, लोक विश्वास, उत्सव और सामुदायिक जीवन, प्रकृति के साथ गहरे संबंध को अभिव्यक्त करती हैं। झरनों, जलप्रपातों और घने वनों से समृद्ध यह क्षेत्र केवल प्राकृतिक संपदा का केंद्र नहीं है, बल्कि सामुदायिक एकता, सांस्कृतिक ऊर्जा और लोकजीवन की निरंतरता का आधार भी है जो पूरे राष्ट्र में अद्‌भुत प्राणशक्ति, उत्साह और उमंग का संचार करता है किंतु इस सांस्कृतिक और प्राकृतिक समृद्धि के बीच यह कई सामाजिक–राजनैतिक चुनौतियों से भी जूझता रहा है, जिनमें नक्सलवाद एक प्रमुख समस्या के रूप में विद्यमान है। ऐसी परिस्थितियों ने विकास, शिक्षा और शांति की प्रक्रिया को कई बार बाधित किया है। इन विरोधाभासी प्रतीकों के बीच एक आशातीत बदलाव के रूप में 'बस्तर पंडुम' का प्रादुर्भाव विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

वर्मा, कामताप्रसाद (2002) ने अपने शोध 'बस्तर क्षेत्र के स्थापत्य का अध्ययन' में पाया कि बस्तर क्षेत्र दुर्गम भौगोलिक क्षेत्रों एवं प्राकृतिक स्थितियों के बावजूद भी सांस्कृतिक गतिविधियों की दृष्टि से सक्रिय क्षेत्र रहा है। इस अंचल में विभिन्न कालों में धर्म–संप्रदाय, कला तथा शैली का समन्वय एवं विकास निरंतर होता रहा है साथ ही स्थानीय प्रतिमानों और विशिष्टताओं का समावेश भी उपलब्ध प्रमाणों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

सेठिया, अनंत कुमार (2005) ने अपने शोध अध्ययन 'बस्तर संभाग में वनौषधि से आर्थिक विकास की सम्भावना' में पाया कि बस्तर संभाग में जड़ी–बूटियों के उत्पादन के माध्यम से आर्थिक विकास की प्रबल संभावना है।

विरूलकर, अनिल कुमार (2007) ने अपने शोध 'पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के संदर्भ में उत्तर बस्तर की मुरिया गोंड जनजाति का स्वास्थ्य एवं संस्कृति' में पाया कि बस्तर के आदिवासी पारंपरिक उपचार विधियों पर पूर्णतया निर्भर होते है।

श्रीवास्तव, जया (2008) ने अपने शोध विषय 'ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बस्तर की मूर्तिकला' में पाया कि भारतीय स्थापत्य कला तथा मूर्तिकला, शिल्पग्रंथों एवं धर्मशास्त्रों के द्वारा मर्यादित है, जो बस्तर अंचल की कला में भी दृष्टव्य है।

पटेल, पुनीत (2018) ने अपने शोध विषय 'बस्तर संभाग की आदिवासी संस्कृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन (अवनद्ध वाद्ययंत्रों के विशेष संदर्भ में)' में पाया कि बस्तर में प्रचलित सभी अवनद्ध वाद्ययंत्र विभिन्न, विशिष्ट सांस्कृतिक अवसरों पर ही प्रयोग में लाए जाते हैं। वर्तमान में बस्तर की संस्कृति में अवनद्ध वाद्ययंत्र विलुप्ति के कगार पर है तथा कुछ लगभग विलुप्त हो चुकी है।

सानिया (2019) ने अपने शोध 'बस्तर की शिल्प परंपरा एक अध्ययन' में पाया कि बस्तर की लोककला अपनी मौलिकता, विविधता, धार्मिक मान्यता, संस्कार, सामाजिक परंपराओं व रूढ़ियों से जुड़ें हुए हैं।

चतुर्वेदी, आराधना (2022) ने अपने अध्ययन विषय 'बस्तर क्षेत्र की देव प्रतिमाएँ एक अध्ययन' में पाया कि बीजापुर के दुड़ेपल्ली नामक स्थान से तालाब की सफाई के दौरान बहुत सी प्रतिमाएँ बाहर निकाली गई हैं। ये सभी प्रतिमाएँ कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है तथा क्षरित अवस्था में हैं। इनका संरक्षण व संवर्द्धन आवश्यक है।

नेताम, उमेश कुमार (2023) ने अपने शोध 'बस्तर के परंपरागत काष्ठ शिल्प का विश्लेषणात्मक अध्ययन' में पाया कि बस्तर के परंपरागत जनजाति कला में विविधताएँ है। इनमें काष्ठ शिल्प पुरातन है।

उपरोक्त संबंधित साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि बस्तर की संस्कृति यहाँ के कण–कण में विद्यमान है। आज के परिवेश में बस्तर के युवा को चाहिए कि वह अपने स्वर्गस्थली सदृश मातृभूमि की सांस्कृतिक विरासत को विलुप्त होने से बचाए। पूर्व में हुए शोध युवा चेतना और उसकी शिक्षा की महत्ता को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त नहीं करते हैं। इस संदर्भ में यह आलेख इसकी क्षतिपूर्ति में सहायक सिद्ध होगा।

उद्देश्य

- बस्तर पंडुम के सांस्कृतिक स्वरूप और उसकी सामाजिक भूमिका का अध्ययन करना।
- बस्तर पंडुम के माध्यम से संस्कृति और शिक्षा के मध्य संबंध को समझना।
- बस्तर पंडुम के द्वारा अनौपचारिक शिक्षा की भूमिका को स्पष्ट करना।

बस्तर पंडुम

बस्तर की अधिष्ठात्री देवी 'माई दंतेश्वरी' की आस्था से अनुप्राणित यहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से 'बस्तर पंडुम' का शुभारंभ सन् 2025 में किया गया। यह उत्सव विगत दो वर्षों से इस अंचल में आयोजित किया जा रहा है। इस उत्सव के द्वारा बस्तर की प्राचीन कला और खान–पान को सहेजने के साथ–साथ क्षेत्र में शांति, विश्वास और विकास के समग्र उन्नयन के एक नए युग का सूत्रपात भी हुआ है। नगाड़ों की थाप, पारंपरिक वेशभूषा में थिरकते कदम, तिरडुड्डी की झनकार, टेराकोटा, ढोकरा धातु शिल्प, काष्ठ शिल्प, सल्फी, ताड़ी, छिंदरस, पेज–लांदा जैसे खाद्य–पेय पदार्थों से लेकर, गौर नृत्य की अद्‌भुत छटा तक यह महोत्सव बस्तर की जनजातीय विरासत को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाने वाला एक भव्य महाकुंभ है, जो आदिवासी जीवन शैली को वैश्वीकरण और आधुनिकता के इस दौर में पुनर्जीवित कर रहा है जो यह दर्शाता है कि बस्तर का आदिवासी आज भी शहरी सर्वसुविधायुक्त या वातानुकलित जीवन शैली के स्थान पर परंपरागत स्वच्छंदतापर्ण जीवन जीना पसंद करता है।

द्रविड़ परिवार की गोंडी भाषा यहाँ की मातृभाषा है और गोंडी में 'पंडुम' का अर्थ होता है, 'उत्सव'। जब बस्तर की माटी अपनी परंपराओं की खुशबू बिखेरता है तब जन्म लेता है 'बस्तर पंडुम' एक ऐसा महोत्सव जो आधुनिकता और विरासत के बीच एक सुंदर सेतु का काम कर रहा है। एक समय जो क्षेत्र केवल संघर्षों की खबरों के लिए जाना जाता था, आज वह अपनी सांस्कृतिक समृद्धि से दुनिया को मंत्रमुग्ध कर रहा है। यह आयोजन न केवल पुरानी आस्थाओं को जीवंत कर रहा है, वरन् नई पीढ़ी को भी अपनी जड़ों से जोड़ रहा है।

इस पंडुम के प्रतीक चिह्न में बस्तर की जीवनरेखा इंद्रावती नदी, चित्रकूट जलप्रपात, छत्तीसगढ़ का राजकीय पशु वनभैंसा, राजकीय पक्षी पहाड़ी मैना, बायसन हॉर्न मुकुट (पुरूषों के लिए), पीतल का मुकुट (महिलाओं के लिए), तिरडुड्डी वाद्ययंत्र, तुरही (तोड़ी) वाद्ययंत्र, बिरिया ढोल, बस्तर कला, सल्फी और ताड़ी के पेड़ को शामिल किया गया है। उक्त चिह्न यह दर्शाते है कि प्रकृति और परंपरा बस्तर के आदिवासी जीवन से सीधे तौर पर जुड़े हुए हैं। अंत में 'ध्येय वाक्य' के रूप में "सहज, सरल, उम्मीदों से भरा अद्वितीय बस्तर" अंकित किया गया है। यह संदेश भयमुक्त और प्रगतिशील बस्तर की नई आशाओं को प्रदर्शित करता है।

संस्कृति और शिक्षा

मैथ्यू आर्नोल्ड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक culture and anarchy (1869) में संस्कृति को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हुए लिखा है कि "संस्कृति पूर्णता का अध्ययन है" (Culture is the study of Perection)। इसका आशय यह है कि शिक्षा के बिना किसी भी विषय का अध्ययन संभव ही नहीं, फिर चाहे वह समाज का हो या संस्कृति का। बस्तर पंडुम इसी अध्ययन

का सुलभ साधन हैं। अतः संस्कृति और शिक्षा का यह अद्भुत समन्वय ही मानवता के विकास की असली धुरी है। जैसा कि महात्मा गाँधी ने कहा था– "संस्कृति किसी राष्ट्र के लोगों के हृदय में निवास करती है, और शिक्षा इसी आत्मा को जागृत करने का माध्यम है।"

जहाँ संस्कृति जीवित रहती है वहीं समाज की आत्मा पोषित होती हैं। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, विवेक और सोचने की शक्ति देती है, जबकि संस्कृति उसे अपने मूल्यों, परंपराओं और जीवन–शैली से जोड़े रखती है। शिक्षा के बिना मनुष्य का विकास अधूरा रहता है और संस्कृति के बिना उसका व्यक्तित्व खोखला हो जाता है, क्योंकि संस्कृति हमें संस्कार देती है और शिक्षा हमें विचार। दोनों एक–दूसरे के बिना अधूरे है। जब शिक्षा और संस्कृति का समन्वय होता है, तब एक संतुलित, जागरूक और संवेदनशील समाज का निर्माण होता है।

"एक समाज जो अपनी विरासत को भूल जाता है, वह दिशाहीन हो जाता है लेकिन वह समाज जो अपनी विरासत को शिक्षा का आधार बनाता है, वह इतिहास रचता है।" *नेल्सन मंडेला*

"संस्कृति समाज के एक सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित वह जटिल संपूर्णता है, जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, नियम, रीति–रिवाज एवं इसी प्रकार से अन्य क्षमताओं एवं आदतों का समावेश होता है।"

ई.बी.टाइलर

क्या संस्कृति और आधुनिक शिक्षा साथ–साथ चल सकते है? बस्तर पंडुम इसका सबसे सटीक उत्तर है। यह मात्र नृत्य और संगीत का मेला नहीं है, तथापि यह युवाओं के भीतर छिपी उस मेधा को निखारने का अभियान है जो दशकों से दबी हुई थी।

शिक्षा और युवा चेतना

"शिक्षा का अंतिम उद्देश्य केवल आजीविका कमाना नहीं बल्कि अपनी जड़ों को पहचानते हुए मानवता की सेवा करना है।" *महात्मा गाँधी*

युवा किसी भी समाज की रीढ़ की हड्डी की तरह होते है तथा सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत भी, जो अपनी नवीन ऊर्जा, विचारों और कौशल से विकास को गति प्रदान करते हैं। यदि उस समाज के युवा शिक्षित, अनुशासित और जागरूक हो तो वे किसी भी राष्ट्र या प्रदेश को नई ऊँचाइयों पर ले जा सकते हैं, क्योंकि शिक्षा वह सेतु है जो, युवा शक्ति को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़कर समाज के रचनात्मक और विकासवादी भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है। संस्कृति हमें पीछे मुड़कर अपनी जड़ों को देखने की शक्ति देती है, जबकि शिक्षा हमें आगे बढ़ने का रास्ता दिखाती है। इन दोनों के बिना कोई भी समाज न तो सभ्य बन सकता है और न ही प्रगति कर सकता है। बस्तर पंडुम इस ओर बढ़ता प्रयास है यह कहना अतिशयोक्ति न होगा।

"शिक्षा व्यक्ति में उन सभी क्षमताओं का विकास है जो उसे अपने परिवेश को नियंत्रित करने और अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के सक्षम बनाएंगी।" *जॉन ड्यूवी*

इस प्रकार संस्कृति और शिक्षा किसी भी समाज की नींव होती है और युवा वह शक्ति है जो इस नींव पर भविष्य की इमारत खड़ी करती है।

जब पूरी दुनिया 21वीं सदी में विकास की ओर अग्रसर हो रही है तो, ऐसे में बस्तर ही क्यों इससे वंचित रहे? सरकार के द्वारा यहाँ की मूलभूल समस्याओं के समाधान एवं सुविधाओं के समग्र साधनों की उपलब्धता के लिए निरंतर प्रयास किया जा रहा है। इन नक्सलियों के पुनर्वास हेतु 'लोन वर्राटु' (अपने घर लौट आओ) और 'नियद नेल्लानार' (आपका अच्छा गाँव) जैसे अभियान चलाए जा रहे हैं। इन योजनाओं के अंतर्गत तत्काल आर्थिक सहायता, रोजगार के अवसर, आवास व स्वास्थ्य लाभ, कौशल प्रशिक्षण तथा शिक्षा की समस्त सुविधाएँ मुहैया करवाई गई हैं। इसी कड़ी में बस्तर के भटके, भ्रमित और शोषित युवा शक्ति को मुख्यधारा में लाने का एक अभिनव पहल है "बस्तर पंडुम"।

बस्तर पंडुमः एक समग्र परिचय

वर्ष 2025

शुरूआत करते हैं 2025 से। सर्वप्रथम बस्तर पंडुम का आयोजन 03 चरणों व 03 स्तरों में 12 मार्च 2025 से लेकर 05 अप्रैल 2025 के मध्य सम्पन्न हुआ। जनपद स्तर पर – 12 मार्च से 20 मार्च 2025 तक, जिला स्तर पर – 21 मार्च से 23 मार्च 2025 तक तथा संभाग स्तर पर – 01 अप्रैल से 05 अप्रैल 2025 तक उक्त तिथियों में आयोजित किया गया। कला के इस

महोत्सव में बस्तर संभाग के सात जिलों जिसमें बस्तर, दंतेवाड़ा, कांकेर, कोण्डागाँव, बीजापुर, नारायणपुर, और सुकमा के 1850 से अधिक ग्राम पंचायतों के प्रतिभागियों सहित अन्य राज्यों जैसे असम, ओडिसा, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, तेलंगाना के लगभग 47,000 कलाकारों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। जिसे "Golden Book for World Record" में "Largest Trible Culture Festival" के अंतर्गत शामिल किया गया है।

प्रतियोगिता हेतु कुल 07 विधाओं का चयन किया गया, जिसमें जनजातीय नृत्य, गीत, नाट्य, वाद्ययंत्र, जनजातीय वेशभूषा एवं आभूषण, शिल्प व चित्रकला, और व्यंजन–पेय पदार्थ का प्रदर्शन किया जाना था। कुल 84 प्रतिभागी दलों में से 34 दल विजेता रहे 48 दल शेष बचे। विजेता दलों को जनपद स्तर पर 10,000 रू., जिला स्तर पर 20,000 रू. और संभाग स्तर पर प्रथम स्थान हेतु 50,000 रू., द्वितीय स्थान हेतु 30,000 रू. व तृतीय स्थान हेतु 20,000 रू. पुरस्कार राशि के साथ स्मृति चिह्न सहप्रमाण–पत्र प्रदान किया गया शेष 48 दलों को 10,000 रू. की प्रोत्साहन राशि व प्रमाण–पत्र भेंट किया गया। संभाग स्तर के कार्यक्रम का संचालन दंतेवाड़ा में किया गया।

नारायणपुर जिला जिसे बस्तर की सांस्कृतिक राजधानी कहा जाता है, खासकर मुरिया जनजाति की कलाओं के लिए। यहाँ के कलाकारों ने गीत, नाट्य, शिल्पकला व चित्रकारी विधा में बाजी मारते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। इससे उस क्षेत्र के माओपाटा नाट्य और रीलो गीत जैसी गहरी सांस्कृतिक जड़ों को एक तरह की अधिकारिक मान्यता मिली हैं, जो यह दर्शाता है कि यहाँ की कला अभी भी कितनी जीवंत और शक्तिशाली है।

इसके अलावा जनजातीय नृत्य के लिए कोण्डागाँव, वाद्ययंत्र के लिए कांकेर, पेय–पदार्थ के लिए बीजापुर, और वेशभूषा के लिए दंतेवाड़ा जिला को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इस प्रकार इस उत्सव का संदेश साफ था कि– भागीदारी अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह सिर्फ एक प्रतियोगिता नहीं जुड़ाव का एक मौका है।

वर्ष 2026

छत्तीसगढ़ के संस्कृति विभाग ने पूरखों की इस अमूल्य विरासत को एक बार पुनः सांस्कृतिक महोत्सव बस्तर पंडुम 2026 के माध्यम से मंच पर उतारा। पिछली बार की तरह इस बार भी इस कार्यक्रम का आयोजन 03 चरणों व 03 स्तरों में 10 जनवरी 2026 से लेकर 09 फरवरी 2026 के मध्य सम्पन्न हुआ। जनपद स्तर पर – 10 जनवरी से 20 जनवरी 2026 तक, जिला स्तर पर – 24 जनवरी से 29 जनवरी 2026 तक तथा संभाग स्तर पर – 07 फरवरी से 09 फरवरी 2026 तक उक्त तिथियों में आयोजित किया गया॥ इस वर्ष भी बस्तर संभाग के 07 जिलों बस्तर, दंतेवाड़ा, कांकेर, कोंडागाँव, बीजापुर, नारायणपुर, तथा सुकमा के 1885 ग्राम पंचायत, 12 नगर पंचायत, 08 नगर पालिका परिषद, 01 नगरपालिका निगम, 32 जनपद तथा जनपद–जिला स्तरीय आयोजन के अंतर्गत कुल 84 टीमों के लगभग 55,000 कलाकारों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। प्रतिभागियों को पंजीयन के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोंनो तरह की सुविधा प्रदान की गई थी। ब्लॉक–स्तरीय पंडुम में इस बार सबसे अधिक दंतेवाड़ा जिले के कलाकारों ने पंजीयन कराया। कुल पंजीकृत प्रतिभागियों में महिलाओं की संख्या पुरूषों के लगभग समकक्ष रही। इससे यह स्पष्ट होता हैं कि बस्तर की संस्कृति को सहेजने और विकास की ओर अग्रसर करने में महिलाएँ पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं।

कुछ परिवर्तन के साथ इस बार विधाओं की संख्या 07 से बढ़कर 12 कर दी गई। जिसमें जनजातीय नृत्य, जनजातीय गीत, जनजातीय नाट्य, वाद्ययंत्र, वेशभूषा–आभूषण, जनजातीय शिल्प–चित्रकला, व्यंजन–पेय पदार्थ प्रदर्शन, आंचलिक साहित्य, खेल, वनौषधि, एवं पूजा–पद्धति को शामिल किया गया।

विजेता दलों को जनपद स्तर पर 10,000 रू., जिला स्तर पर 20,000 रू. और संभाग स्तर पर प्रथम स्थान हेतु 50,000 रू., द्वितीय स्थान हेतु 30,000 रू. व तृतीय स्थान हेतु 20,000 रू. की पुरस्कार राशि के साथ समृति चिह्न सहप्रमाण–पत्र प्रदान किया गया। शेष 48 दलों को 10,000रू.की प्रोत्साहन राशि व प्रमाण–पत्र भेंट किया गया। सभी 12 श्रेणियों के प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले कलाकारों को राष्ट्रपति भवन (दिल्ली) में आमंत्रित किया गया। जहाँ उन्हें अपनी कला का प्रदर्शन करने और सहभोज में शामिल होने का ऐतिहासिक अवसर मिला। दंतेवाड़ा को जनजातीय नृत्य, गीत, और व्यंजन प्रदर्शन के लिए, सुकमा को जनजातीय नाट्य व वेशभूषा के लिए, कांकेर को जनजातीय शिल्प व चित्रकला के लिए, कोण्डागाँव को आंचलिक साहित्य और वाद्ययंत्र के लिए, बीजापुर को जनजातीय पेय पदार्थ के लिए, नारायणपुर को जनजातीय आभूषण के लिए और बस्तर को वनौषधि के लिए प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इस वर्ष संभाग स्तर के कार्यक्रम का आयोजन जगदलपुर में किया गया।

बस्तर पंडुम की विशेषताएँ

- **जनजातीय संस्कृति का उत्सवः** रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार – "संस्कृति एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन में छाया हुआ है। यह एक आत्मिक गुण है, जो मनुष्य के स्वरूप में उसी तरह व्याप्त है जिस प्रकार फूलों में सुगंध और दूध में मक्खन। इसका निर्माण एक या दो दिन में नहीं, बल्कि युग–युगांतर में होता है।" यह उत्सव जनजातीय सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन है।
- **सामुदायिक सहभागिता और एकताः** पंडुम की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें गाँवों और परगनों के लोग सामूहिक रूप से भाग लेते हैं, जिससे सामाजिक एकता, आपसी सहयोग और सामूहिक चेतना को बल मिलता है।

- **पारंपरिक नृत्य, लोकगीत और वाद्ययंत्रः** पंडुम में मांदर, मोहरी, नगाड़ा, ढोल, तुड़बुड़ी तिरली (बांसुरी), और तिरडुड्डी जैसे बस्तरिया वाद्ययंत्रों की धुन में किया जाने वाला लोकनृत्य और लोकगीत प्रस्तुत किया जाता है।
- **लोककला और हस्तशिल्प का प्रदर्शनः** लगभग 4000 वर्ष प्राचीन मोम ढलाई तकनीक पर आधारित बस्तर का ढोकरा धातु शिल्प विशेष रूप से उल्लेखनीय शिल्प कला है। इसके अलावा काष्ठ शिल्प, टेराकोटा शिल्प, बाँस कला, तथा हस्तनिर्मित आभूषणों का प्रदर्शन इस उत्सव की रौनक बढ़ाने में कोई कमी नहीं रखता।

- **पेय पदार्थ व्यंजन, एवं वनौषधिः** पेय पदार्थ के रूप में पेज, ताड़ी, लांदा, महुआ पेय, छिंदरस, सल्फी तथा खाद्य पदार्थों में चापड़ा चटनी, बांस की सब्जी, कोदो–कुटकी भात, महुआ लड्डू, झुरगा भाजी के साथ–साथ विभिन्न वनौषधियों का प्रदर्शन किया गया।
- **पारंपरिक वेशभूषा और आभूषणः** बस्तर की पारंपरिक वेशभूषा प्राकृतिक सामग्रियों और सादगी का प्रतीक है। आभूषणों में कौड़ी, सुता, सूड़ी, कंठी, बाहूंटा, ऐंठी, मुंदरी, चूड़ी, करधन, पैरी, और कौड़ियों की कलगी से सजे–धजे कलाकारों ने प्रदर्शन किया।

- **अनौपचारिक शिक्षा:** इस कार्यक्रम के दौरान स्कूली बच्चे और युवा पारंपरिक और सामुदायिक व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से देखकर सीखते है। यह सीखना पुस्तकीय नहीं, बल्कि अनुभवात्मक और अवलोकनात्मक होता है।
- **लोकज्ञान का संरक्षण और हस्तांतरण:** इस उत्सव के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पारंपरिक ज्ञान का हस्तांतरण होता है। इस प्रकार यह उत्सव सांस्कृतिक पुनरूत्थान को सुनिश्चित करने का एक अवसर है।
- **युवाओं की भागीदारी:** यह कार्यक्रम मूलतः युवा शक्ति के उदय पर केंद्रित है। ताकि उन्हें सामुदायिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक गौरव का बोध हो और भविष्य के लिए उनमें नई चेतना जागृत हो।

- **अतिविस्तृत और व्यापक उद्देश्य:** इस उत्सव का मुख्य उद्देश्य जनजातीय लोककलाओं के मूल स्वरूप को जीवित रखना तथा कला समूहों के सतत विकास को प्रोत्साहित करना है।
- **सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का मंच:** यह पंडुम केवल एक प्रतियोगिता नहीं, बल्कि बस्तर के गौरवशाली इतिहास को सहेजने का एक अनोखा माध्यम है।

सकारात्मक पक्ष

- पंडुम बस्तर की लुप्तप्राय जनजातीय कला, साहित्य और परंपराओं को प्रदर्शित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर का मंच प्रदान करता है। यह महोत्सव सांस्कृतिक संरक्षण की ओर एक प्रयास है।
- यह जनजातीय आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है जहाँ स्थानीय शिल्प और उत्पादों को बाजार मिलता है, व युवाओं को अपनी पारंपरिक कला को प्रोफेशनल तरीके से सीखने का अवसर मिलता है।
- इस भव्य आयोजन में अपनी भाषा और परंपरा को राजकीय और वैश्विक मंच पर सम्मानित होते देखकर स्थानीय लोगों में मुख्यधारा की शिक्षा, संस्कृति और विकास के प्रति गौरव और आत्मविश्वास की भावना जागृत होती है।
- इस कार्यक्रम के माध्यम से ग्राम प्रोत्साहन योजना के तहत सरकार द्वारा नक्सल मुक्त घोषित गाँवों को विकास निधि के रूप में 01 करोड़ रूपये तक की राशि प्रदान की जा रही है, जिससे बुनियादी ढाँचें का विकास संभव हो रहा है।
- पंडुम के माध्यम से पर्यटन और हस्तशिल्प के क्षेत्र में युवाओ के लिए स्वरोजगार (Entrepreneurship) के नए द्वार खुल रहे हैं।
- शिक्षा और रचनात्मकता से जुड़कर युवा मुख्यधारा में लौट रहें हैं।
- यह उत्सव घने जंगलों में छुपी प्रतिभा को उसकी वास्तविक पहचान और सम्मान दिलाने में अतुलनीय योगदान दे रहा है।

- प्राकृतिक स्थलों के अतिरिक्त अब बस्तर पंडुम पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। वर्ष 2025 की तुलना में वर्ष 2026 में पर्यटकों की संख्या में 60 से 70 फीसदी बढ़ोतरी की संभावना जताई जा रही है।
- पर्यटकों के आवागमन से स्वरोजगार के अवसर भी काफी बढ़े हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई है।
- यह उत्सव बस्तर की बदलती तस्वीर को दर्शाता है, जहाँ अब भय के बजाय शांति, विकास और गौरव की बात हो रही है।
- पंडुम के दौरान होने वाले विभिन्न पारंपरिक गतिविधियों, लोकनृत्यों, गीतों और अनुष्ठानों के माध्यम से वरिष्ठ पीढ़ी अपने अनुभव, कौशल और जीवन दृष्टि को नव पीढ़ी तक पहुँचा रही है।
- किसी भी समाज की मातृशक्ति अपने सामाजिक–संस्कृतियों का संरक्षण करती है साथ ही उसे नई पीढ़ी तक हस्तांरित करके उसकी निरंतरता को बनाए रखती हैं।
- यह पहल सामाजिक पुनर्वास, संवाद और सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण संकेत प्रस्तुत करती है।

नकारात्मक पक्ष

बस्तर पंडुम को लेकर मुख्य रूप से सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं से जुड़ी आपत्तियाँ सामने आई हैं। जहाँ सरकार इसे पर्यटन और संस्कृति को बढ़ावा देने वाला महोत्सव मानती है, वहीं आदिवासी समुदायों ने इसके कुछ नकारात्मक पहलुओं पर चिंता जताई है। इन मुद्दों से बचने की आवश्यकता है।

- इस आयोजन के द्वारा जनजातीय परंपराओं को एक इवेंट के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, इस पर व्यवसायीकरण का प्रभाव पड़ने से इसकी मौलिकता नष्ट हो सकती है।
- सर्व आदिवासी समाज का मानना है कि 'पंडुम' जनजातीय समाज के पवित्र अनुष्ठान से संबंधित शब्द हैं न कि सार्वजनिक प्रदर्शन। ग्राम सभा की सहमति के बिना पंडुम शब्द का उपयोग असंवैधानिक और परंपराओं के विरूद्ध है।
- स्थानीय समुदायों का डर है कि, ऐसे उत्सव का आयोजन करने से उनकी निजी और सामुदायिक परंपराएँ अपना मूल स्वरूप खो सकती हैं। इससे उनकी धार्मिक आस्था और प्राचीन विश्वास पर आघात हो सकता है।
- संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण कलाकारों, दर्शकों और पर्यटकों की सही देखभाल और मुलभूत सुविधाओं की समुचित व्यवस्था भी एक प्रमुख चुनौती है।
- उत्सव के दौरान और बाद में स्थानीय वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में अस्थायी वृद्धि हो सकती है।
- प्रतिवर्ष हो रहे आयोजन में प्रतिभागियों की संख्या में अधिकाधिक वृद्धि हो रही है। इसकी संपूर्ण व्यवस्था में आर्थिक व्यय पर अतिरिक्त दबाव बढ़ेगा।
- सभी वर्गों और समुदायों की समान भागीदारी में, तथा संसाधनों, अवसरों अथवा मंचों के वितरण में अनिश्चितता के कारण कुछ समूह स्वयं को उपेक्षित महसूस करते है। जिससे उनके भीतर असंतोष की भावना उत्पन्न होती है।

सावधानियाँ

- उत्सव के दौरान स्थानीय जनजातीय परंपराओं, रीति–रिवाजों और आस्थाओं का सम्मान करना आवश्यक है, ताकि आयोजन की मूल भावना बनी रही।
- बड़े स्तर पर लोगों की उपस्थिति को ध्यान में रखते हुए उचित व्यवस्था, मार्गदर्शन और अनुशासन बनाए रखना चाहिए, ताकि किसी प्रकार की अव्यवस्था या दुर्घटना न हो।
- स्थानीय प्रशासन द्वारा निर्धारित सुरक्षा निर्देशों का पालन करना आवश्यक है, विशेषकर संवेदनशील क्षेत्रों में।
- प्रतिभागियों के साथ किसी भी प्रकार का उपहास, अभद्र व्यवहार या अनुचित हस्तक्षेप न हो।
- युवाओं की सक्रिय भागीदारी सकारात्मक दिशा में हो, इसके लिए संयम बनाए रखना आवश्यक है।

निष्कर्ष

अंततः 'बस्तर पंडुम' सांस्कृतिक आयोजन होने के साथ–साथ एक जीवंत शैक्षिक प्रक्रिया भी है। यह बच्चों और युवाओं को सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों से परिचित कराता है तथा उनके समग्र विकास में सहायक सिद्ध होता है। अतः इसे अनौपचारिक शिक्षा के प्रभावी माध्यम के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है। शिक्षा और संस्कृति का यह अनूठा संयोग

बस्तर के युवाओं को जागरूक बनाकर आत्मसम्मान के साथ जीने की नई राह भी दिखा रहा है।

जरूरत इस बात की है कि पंडुम के इस शैक्षणिक और चेतना मूलक स्वरूप को निरंतरता मिले ताकि आने वाली पीढ़ी अपनी वास्तविक सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी रहे। इस प्रकार 'बस्तर पंडुम' यह साबित करता है कि जब शिक्षा और विरासत का मिलन होता है, तो बदलाव की गूँज सदियों तक सुनाई देती है।

संदर्भ सूची

1. चतुर्वेदी, ए. (2022) *बस्तर क्षेत्र की देव प्रतिमाएँ एक अध्ययन.* इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़।
2. नेताम, यू.के. (2023) *बस्तर के परंपरागत काष्ठ शिल्प का विश्लेषणात्मक अध्ययन.* इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़।
3. पटेल, पुनीत (2018) *बस्तर संभाग की आदिवासी संस्कृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन.* इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़।
4. वर्मा, के. (2002) *बस्तर क्षेत्र के स्थापत्य का अध्ययन.* पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर।
5. विरूलकर, ए.के. (2007) *पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के संदर्भ में उत्तर बस्तर की मुरिया गोंड जनजाति का स्वास्थ्य एवं संस्कृति.* पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर।
6. सानिया (2019) *बस्तर की शिल्प परंपरा एक अध्ययन.* पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर।
7. सेठिया, ए.के. (2005) *बस्तर संभाग में वनौषधि से आर्थिक विकास की सम्भावना.* पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर।
8. श्रीवास्तव, जे. (2008) *ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बस्तर की मूर्तिकला.* पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर।

****